रोज़ा की हिक्मतें और उसके फायदे

﴿ حِكَم الصيام وفوائده ﴾

[हिन्दी – **Hindi** – هندي]

मुहम्मद बिन सालेह अल–उसैमीन रहिमहुल्लाह

अनुवादः अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह

2009 - 1430

islamhouse.com

﴿ حِكَم الصيام وفوائده ﴾

« باللغة الهندية »

محمد بن صالح العثيمين رحمه الله

ترجمة: عطاء الرحمن ضياء الله

2009 - 1430

islamhouse.com

بسم الله الرحمن الرحيم

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मैं अति मेहरबान और दयालु अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ।

إن الحمد لله نحمده ونستعينه ونستغفره، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا، وسيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وبعد:

हर प्रकार की हम्द व सना (प्रशंसा और गुणगान) अल्लाह के लिए योग्य है, हम उसी की प्रशंसा करते हैं, उसी से मदद मांगते और उसी से क्षमा याचना करते हैं, तथा हम अपने नफ्स की बुराई और अपने बुरे कामों से अल्लाह की पनाह में आते हैं, जिसे अल्लाह तआला हिदायत दे दे उसे कोई पथभ्रष्ट (गुमराह) करने वाला नहीं, और जिसे गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं। हम्द व सना के बाद :

दूसरा अध्याय

रोज़े की हिक्मतों और उसके लाभ के उल्लेख में

अल्लाह तआला के अच्छे नामों में से एक नाम ''अल–हकीम'' (बुद्धिमान और तत्वदर्शी) है, और हकीम उसे कहते हैं जो हिक्मत (बुद्धि और तत्वदर्शिता) से विशिष्ट हो, और हिक्मत का मतलब होता है मामलों को सुदृढ़ता के साथ संपन्न करना और उन्हें उनके उचित स्थानों पर रखना। अल्लाह तआला के शुभ नामों में से इस नाम की अपेक्षा यह है कि अल्लाह तआला ने जो कुछ पैदा किया या वैध किया है, उसके अंदर एक महान हिक्मत (बुद्धि और तत्वदर्शिता) निहित है, जिसे जानने वाले जानते हैं और न जानने वाले उस से अनभिज्ञ हैं।

रोज़ा जिसे अल्लाह तआला ने वैध किया है और अपने बन्दों पर अनिवार्य कर दिया है, उसके अंदर बड़ी–बड़ी हिक्मतें और ढेर सारे लाभ हैं :

❖ **रोज़ा की हिक्मतों में से एक यह है कि** : वह एक ऐसी इबादत (उपासना) है जिस के द्वारा बन्दा अपनी प्राकृतिक तौर पर प्रिय और पसंदीदा चीजों अर्थात् खाना, पानी और संभोग इत्यादि को त्याग कर अल्लाह की निकटता और समीप्य प्राप्त करता है, ताकि इसके फलस्वरूप अपने पालनहार की प्रसन्नता और उसके सम्मान के घर (स्वर्ग) से लाभान्वित हो। इस से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि वह अपने पालनहार की प्रिय और पसंदीदा चीज़ों को अपने मन की आकांक्षाओं और प्रिय चीज़ों पर तथा परलोक को दुनिया पर वरीयता और प्रधानता देता है।

❖ **रोज़ा की एक हिक्मत यह भी है कि** जब रोज़ादार अपने रोज़े के कर्तव्य का अच्छे ढंग से पालन कर ले, तो यह उसके लिए तक़्वा व परहेज़गारी (संयम और ईश्वरभय) का कारण है, अल्लाह तआला ने फरमाया :

﴿ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ كُتِبَ عَلَيۡكُمُ ٱلصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى ٱلَّذِينَ مِن قَبۡلِكُمۡ لَعَلَّكُمۡ تَتَّقُونَ ١٨٣ ﴾ (البقرة: ١٨٣)

"ऐ ईमान वालो! तुम पर रोज़े रखना अनिवार्य किया गया है जिस प्रकार तुम से पूर्व लोगों पर अनिवार्य किया गया था, ताकि तुम संयम और भय अनुभव करो।" (सूरतुल–बक़राः183)

अतः रोज़ेदार को अल्लाह तआला का तक़्वा अपनाने का आदेश किया गया है, और तक़्वा का मतलब यह है कि अल्लाह के आदेश का पालन किया जाये और उसकी निषिद्ध की हुई चीज़ों से बचाव किया जाये। और

यही रोज़ा का सब से महान उद्देश्य है, उसका उद्देश्य रोज़ेदार को खाने, पीने और संभोग से रोक कर दंडित करना नहीं है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमान है :

«مَن لم يَدَعْ قول الزور والعمل به والجهل فليس لله حاجة في أن يَدَعَ طعامه وشرابه». رواه البخاري.

''जो व्यक्ति झूठ बात कहना, झूठ पर अमल करना और और मूर्खता को त्याग न करे, तो अल्लाह तआला को इस बात की कोई आवश्यकता नहीं है कि वह अपना खाना पानी त्याग कर दे।''

''झूठ बात कहने'' से तात्पर्य प्रत्येक हराम (निषिध) चीज़ है, जैसे झूठ बोलना, गीबत (पिशुनता) गाली गलोज और इनके अतिरिक्त अन्य हराम चीज़ें। और **''झूठ पर अमल करने''** से अभिप्राय हर हराम (निषिध) कार्य पर अमल करना है, जैसे कि खियानत (गद्दारी), धोखा, शारीरिक यातना, धन–संपत्ति छीन लेने और इस प्रकार की अन्य चीज़ों के द्वारा लोगों पर जुल्म और अत्याचार करना। इसी अध्याय में उन चीज़ों का सुनना भी आता है जिन का सुनना हराम (वर्जित) है, जैसे वर्जित गाने और म्यूज़िक उपकरण इत्यादि। और जिहालत (मूर्खता) से अभिप्राय बे–वकूफी और कम अक़्ली है, अर्थात् कथन और कर्म में बुद्धि और समझबूझ से काम न लेना।

जब रोज़ा रखने वाला इस आयत और हदीस के तक़ाज़े (अपेक्षा) के अनुसार कार्य करेगा, तो रोज़ा से उसके नफ्स का प्रशिक्षण, उसके आचार का शुद्धीकरण और उसके व्यवहार का सुधार होगा, और रमज़ान का महीना जाते–जाते वह अत्यंत प्रभावित होगा, जिसका प्रभाव उसके नफ्स, उसके आचरण और उसके व्यवहार पर स्पष्ट रूप से दिखायी देगा।

❖ **रोज़ा की हिक्मतों में से यह भी है कि** धन्वान आदमी अपने ऊपर अल्लाह की तरफ से प्रदान की हुई मालदारी की नेमत के महत्व को पहचानता है कि अल्लाह तआला ने उसके लिए शरई (संवैधानिक) तौर पर हलाल चीज़ों में से उसकी मन पसंद चीज़ों जैसे कि खाना, पानी और पत्नी से संभोग आदि की प्राप्ति को आसान कर दिया है और उसे क़ज़ा व क़द्र के तौर पर भी उसके लिए उप्लब्ध करा दिया है, चुनाँचि इस नेमत पर वह अल्लाह का शुक्रगुज़ार होता है और अपने उस गरीब और ज़रूरतमंद भाई को भी याद रखता है जिसे ये चीज़ें प्राप्त नहीं हैं और उस पर दान (खैरात) और एहसान (उपकार) के द्वारा दानशीलता का प्रदर्शन करता है।

❖ **रोज़ा की हिक्मतों में** से नफ्स पर कंट्रोल और उस पर नियंत्रण प्राप्त करने का अभ्यास करना भी है, ताकि वह अपने नफ्स को ऐसी चीज़ों में लगा सके जिस के अंदर दुनिया व आखिरत में उसकी खैर व भलाई, हित और सौभाग्य है, और अपने आप को पाशुओं जैसा मनुष्य बनने से दूर रखे जो अपने नफ्स को लज़्ज़तों और शह्वतों से सुरक्षित नहीं रख पाता है; क्योंकि इसमें उसके नफ्स का हित होता है।

❖ **रोज़ा की हिक्मतों में से** एक हिक्मत स्वास्थ्य लाभ की प्राप्ति भी है जो खाने को कम करने और पाचन प्रणाली को एक निश्चित समय के लिए आराम पहुँचाने के परिणामस्वरूप प्राप्त होता है, क्योंकि इस तरह शरीर को हानि पहुँचाने वाले अवशेष और बेकार तत्व शरीर के अंदर जमने नहीं पाते हैं।